हिंसा के कार्य और कृपा के कार्य

लेखक - उदय बालकृष्णन (शिक्षक, IISc बेंगलुरु)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) से संबंधित है।

द हिन्दू

07 अक्टूबर, 2019

"गांधी जी की 150वीं जयंती वर्ष के दौरान, भारत के पास अपना मानवीय पक्ष दिखाने का अवसर है।"

30 जनवरी, 1948 को महात्मा गांधी की हत्या के बाद से, दुनिया ने बड़े पैमाने पर हिंसा के कुछ भयावह उदाहरणों के साथ-साथ कुछ उल्लेखनीय पश्चाताप, क्षमा और कृपा के कृत्यों को भी देखा है।

सबसे पहले, लोगों के साथ हुई अमानवीयताओं पर विचार करते हैं। कुछ अनुमानों के अनुसार, 1958-1961 में पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना में चेयरमैन माओ जेडॉन्ग के समय में अकाल ने 20-40 मिलियन लोगों को मौत के नींद सुला दिया था। 1971 में पूर्वी पाकिस्तान में पाकिस्तानी सेना के अभियान के परिणामस्वरूप लगभग तीन मिलियन बंगालियों की मौत हुई थी। कम्बोडियन नरसंहार (1975-79) में दो मिलियन कम्बोडियन मारे गए थे और रवांडा में 1994 की सामूहिक हत्याओं में एक लाख टुटीस मारे गये थे।

क्षमा और सहानुभूति

लगभग इसी अवधि में दुनिया ने मानव जाति के अधिक क्षमाशील और दयालु पक्ष के कुछ आश्चर्यजनक उदाहरण भी देखे। भारतीय संविधान को तेजी से बढ़ते धार्मिक ध्रुवीकरण और गांधी की हत्या के दौर में विकसित किया गया था। भारतीय गणराज्य के संस्थापक दस्तावेज ने धार्मिक विभाजन पर भारत का रुख बदल दिया, वो भी ऐसे समय में जब यह असंभव दिख रहा था। हांलाकि, साथ ही यह ऐतिहासिक रूप से अन्याय को बढ़ावा भी दे रहा था। इसी तरह, 1996 में स्थापित दक्षिण अफ्रीका के सत्य और सुलह आयोग ने रंगभेद के शिकार और अपराधियों दोनों को आवाज देकर लोकप्रिय लोकतंत्र के लिए देश के रक्तहीन संक्रमण को सुनिश्चित किया।

जर्मन द्वारा यहूदियों के खिलाफ अपराधों की जिम्मेदारी की स्वीकृति कोई कम प्रभावशाली नहीं थी। बर्लिन के एक प्रमुख हिस्से में, 200,000 वर्ग फुट फैले क्षेत्र में, कोई भी राष्ट्रीय पश्चात्ताप के लिए दुनिया के सबसे बड़े और सबसे शक्तिशाली स्मारक का अनुभव कर सकता है। 2005 में खोला गया, यहूदी मृतकों के लिए जर्मन स्मारक, ताबूतों की एक विशाल कब्रिस्तान जैसा दिखता है, जो सभी जर्मनों के पूर्वजों द्वारा यहूदियों के खिलाफ किये गये अत्याचारों का एक अनुस्मारक है। जर्मन सरकार ने इस विशाल स्मारक का समर्थन किया जो इतिहास में अद्वितीय है।

7 दिसंबर, 1970 को वारसॉ में यहूदी बस्ती में एक स्मारक पर माल्यार्पण करने के बाद, जर्मन चांसलर विली ब्रांट, अचानक ही एक गांधीवादी हाव-भाव में आधे मिनट के लिए अपने घुटनों पर बैठ गए। प्रायश्चित के उस क्षण में उन्होंने निर्विवाद रूप से उनके पूर्वजों द्वारा किये गये अत्याचार की जिम्मेदारी ली और जर्मनी के कंधों पर व्याप्त एक बड़े बोझ को कम करने का प्रयास किया।

ब्रांट के वारसॉ के आदर पूर्व घुटने पर बैठने की घटना के बाद 2015 में जर्मन चांसलर एंजेला मार्केल के कहने पर एक लाख शरणार्थियों को अनुमति दी, जो इस्लामिक स्टेट के कारण जर्मन से भाग गए थे। सुश्री मार्केल के निर्णय को किसी भी नेता द्वारा लिया गया सबसे साहसी मानवीय निर्णय माना जाता है।

खो दिए गये मौके

हालांकि, इस संदर्भ में कुछ ऐसे भी मुद्दे रहे है जिसका पूरा लाभ नहीं उठाया जा सका है। रोहिंग्या मुद्दे के लिए खड़े होने के अवसर के बावजूद, म्यांमार की आंग सान सू की ने अपने देश में अपने उत्पीड़न को सही ठहराने के विकल्प का चुनाव किया। पड़ोसी देश, जैसे भारत भी रोहिंग्या शरणार्थियों की समस्या से खुद को दूर रखने की कोशिश कर रहा है।

भारत में सबसे बड़ी त्रासदी सामने आ रही है। असम में राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर जैसे बेढंगे और अस्पष्ट प्रणाली सैंकड़ों-हजार लोगों को अनिश्चित काल के लिए आंतरिक रूप से कैंप में रहने के लिए मजबूर कर रहा है, जहाँ उन्हें बांग्लादेश में प्रत्यावर्तन की जरा सी भी उम्मीद नहीं है, जहाँ से वे कई साल पहले भाग गए थे।

अब देश भर में एनआरसी के विस्तार का खतरा भी मंडरा रहा है। भारत के पास इस ढोंग को खत्म करने का सुनहरा अवसर है जहाँ भारत विदेशी लोगों के रूप में पहचाने गए सभी लोगों को नागरिकता देकर उन्हें वोटिंग का अधिकार प्रदान करे। गांधी जी की जयंती के 150वें वर्ष में इस तरह की कृपा दिखाने का यह सही अवसर है।

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. निम्नलिखित कथनों में से असत्य कथन की पहचान कीजिए:-

(a) 1971 में पूर्वी पाकिस्तान में पाकिस्तानी सेना के अभियान के परिणाम स्वरूप लगभग तीन मिलियन बंगालियों की मौत हुई थी।

(b) 1996 में दक्षिण अफ्रीका में सत्य और सुलह आयोग की स्थापना हुई।

(c) 2005 में खोला गया यहूदी मृतकों के लिए जर्मन स्मारक कॉफिन के विशाल कब्रिस्तान जैसा दिखता है।

(d) 2017 में जर्मन चांसलर एंजेला मार्केल के कहने पर एक लाख शरणार्थियों को रहने की अनुमति दी गई।

Expected Questions (Prelims Exams)

1. Choose the incorrect statement from the following statements: -

(a) As a result of the operation of the Pakistan Army in East Pakistan in 1971, nearly three million Bengalis were killed.

(b) In 1996, the Truth and Reconciliation Commission was established in South Africa.

(c) The German monument for the deceased Jewish opened in 2005 resembles the massive cemetery.

(d) In 2017, at the behest of German Chancellor Angela Merkel, one million refugees were allowed to live.

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्रश्न: क्या एनआरसी से जुड़े मानवाधिकार चुनौतियों से लड़ने में गांधीवादी सिद्धांतों की वर्तमान में कोई प्रासंगिकता है? अपने मत के पक्ष में तर्क प्रस्तुत कीजिए।

Does Gandhian principles currently have any relevance in fighting the human rights challenges associated with NRC? Give an argument in favor of your opinion.

(250 Words)

नोट : 5 अक्टूबर को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1 (d) होगा।